# प्रारम्भिक समाज
## — एवं —
# राजनीति दर्शन

प्रो. अशोक कुमार वर्मा

Scanned with CamScanner

# राजनीति-दर्शन
## ( POLITICAL PHILOSOPHY )

### राजनीति-दर्शन का स्वरूप तथा इसका राजनीतिशास्त्र से भेद
### ( Political philosophy : Its nature and its distinction from political science )

#### 9.1. परिचय

यदि समाज-अध्ययन शब्द का वृहत् अर्थ में प्रयोग हो तो राजनीति का अध्ययन भी उसी के अन्तर्गत आ जाता है। समाज के अध्ययन के अन्तर्गत समाज में रहने वाले मनुष्य की हर प्रकार की क्रिया-कलापों का अध्ययन सम्मिलित है; राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक सभी क्रियाओं का। इस दृष्टि से राजनीति-अध्ययन भी समाज अध्ययन का ही एक अंश है। पर संकुचित अर्थ में समाज अध्ययन और राजनीति अध्ययन में अन्तर है। राजनीति अध्ययन में मनुष्य की एक विशेष प्रकार की क्रिया का विचार होता है—राजनीतिक क्रिया का। राजनीतिक क्रिया ऐसी क्रिया है जिसमें मनुष्य एक नागरिक समुदाय के सदस्य के रूप में परस्पर सम्बन्धित होने के कारण अपने समुदाय की व्यवस्थाओं व दशाओं की उपयोगिता के बारे में सोचते-समझते है और उनमें परिवर्तन लाने के लिए सुझाव देते है; प्रस्तावित सुझावों को स्वीकार करने के लिए दूसरों को मनाते हैं और परिवर्तनों को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं उसके अनुकूल व्यवहार करते है। समाज-अध्ययन के अन्तर्गत वैसी मानव क्रियाएँ है जो किसी अन्य शास्त्र के वस्तु-विषय नहीं है, जैसे—सामाजिक संस्था के रूप में परिवार, धर्म आदि। जिस प्रकार समाज का अध्ययन दो दृष्टियों से किया जाता है, वैज्ञानिक दृष्टि से या दार्शनिक दृष्टि से और जैसे वैज्ञानिक दृष्टि से समाज के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जाता है और दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन करने को समाज-दर्शन, उसी प्रकार राजनीति का भी दो दृष्टियों से अध्ययन किया जाता है, वैज्ञानिक दृष्टि से या दार्शनिक दृष्टि से। एक को राजनीतिशास्त्र और दूसरे को राजनीति-दर्शन कहा जाता है।

राजनीति-दर्शन के स्वरूप को जानने के लिए राजनीतिशास्त्र क्या है तथा उसके क्षेत्र को जान लेना आवश्यक है।

राजनीतिशास्त्र क्या है? यह मनुष्य के राजनीतिक जीवन और उससे सम्बद्ध समूहों और संस्थाओं का अध्ययन है। गेटेल के अनुसार राजनीतिशास्त्र राज्य का विज्ञान है। यह विज्ञान राजनैतिक समितियों, सरकार के संगठन, कानून की व्यवस्था तथा अन्तर्राजकीय सम्बन्धों का अध्ययन करता है। गार्नर ने बताया है कि राजनीतिशास्त्र से राज्य की उत्पत्ति, उसके स्वरूप, राजनीतिक संगठनों के स्वरूप, उनका इतिहास तथा उनके रूपों और राजनैतिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। कभी-कभी राजनीतिक सिद्धान्त और राजनीति-दर्शन को एक मान लिया जाता है, पर ऐसा मानना भ्रामक है। राजनीतिक



Scanned with CamScanner

सिद्धान्त और राजनीति-दर्शन में वैसा ही अन्तर है जैसा सामाजिक सिद्धान्त और
दर्शन में।

राजनीतिक तथ्यों की व्याख्या के लिए राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता
पर यह कार्य राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में आता है। राजनीतिशास्त्री अन्य प्राकृतिक वैज्ञा
की भाँति तथ्यों की व्याख्या की चेष्टा करता है। उसका लक्ष्य है तथ्यों की व्याख्या
अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति उसके सिद्धान्तों का परीक्षण के द्वारा सत्यापन
अनुभव के द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर सामान्यीकरण और उनका परीक्षण राजनीति
में होता है।

राजनीति-दर्शन भी सैद्धान्तिक है पर राजनीतिशास्त्र से भिन्न। इसमें राज्य के
पहलुओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। राजनीति-दर्शन राज्य
जीवन का अर्थ तथा उद्देश्य से सम्बन्धित है। यह राज्य के लक्ष्य, आदर्श तथा मूल्
अध्ययन है। राजनीति-दर्शन के, इसीलिए दो पक्ष हैं—रचनात्मक तथा समीक्षात्मक

राजनीति-दर्शन का रचनात्मक पक्ष है :—

(i) राजनीतिक चिन्तन का स्पष्टीकरण।

(ii) राजनीतिक अवधारणाओं में भाषागत अस्पष्टताओं को दूर करना और समीक्षा
पक्ष है:

(i) राजनीतिक सिद्धान्तों का मूल्यांकन

(ii) राजनीतिक आदर्शों का सर्वेक्षण तथा मूल्यांकन,

(iii) राजनीति विज्ञान की पद्धतियों की समीक्षा किस अर्थ में राजनीति विज्ञ
विज्ञान कहा जा सकता है?

अपने समीक्षात्मक तथा रचनात्मक दोनों पक्षों के लिए राजनीति-दर्शन को राजनी
तथ्यों की आवश्यकता होती है। राजनीतिक तथ्यों या सिद्धान्तों का अध्ययन राजनीति
में होता है। इसलिए राजनीति-दर्शन और राजनीतिशास्त्र एक दूसरे के पूरक है।

राजनीति-दर्शन का राजनीतिशास्त्र से भेद करते हुए कुछ विचारकों ने राजनीति
को वर्णनात्मक या यथार्थ विज्ञान कहा है और राजनीति-दर्शन को आदर्श
राजनीतिशास्त्र में राजनीतिक तथ्यों का जैसे वे हैं अध्ययन किया जाता है। पर राज
दर्शन में आदर्शों के आधार पर ही उन तथ्यों का मूल्यांकन होता है। राजनीतिशास्त्र
इसीलिए राजनीतिक तथ्यों के विश्लेषण से सम्बन्ध है, पर राजनीति-दर्शन का
मूल्यांकन से। इस आधार पर राजनीति-दर्शन को आदर्शमूलक कहा जा सकता

रैफेल ने राजनीति-दर्शन के स्वरूप की चर्चा करते हुए बतलाया है कि दर्शन
लक्ष्य है—(i) अवधारणाओं का स्पष्टीकरण और (ii) विश्वासों का समीक्षा
मूल्यांकन। विश्वासों के समीक्षात्मक मूल्यांकन से तात्पर्य है किसी विश्वास के
या नकारने का विवेकपूर्ण आधार बतलाने की चेष्टा करना। बहुत से विश्वास
साधारणतः बिना किसी युक्ति के स्वीकारा या नकारा जाता है। उन विश्वासों के
या नकारने का आधार ढूँढ़ना समीक्षात्मक मूल्यांकन है। विज्ञान का लक्ष्य है व्याख्या
पर दर्शन का लक्ष्य है औचित्य ढूँढ़ना। एक आपत्ति की जा सकती है कि विज्ञान
कोई पूर्वकल्पना सत्य है या असत्य यह प्रमाणित करने के लिए युक्तियों का प्रयोग
जाता है तो दर्शन और विज्ञान में अन्तर क्या हुआ? वास्तव में अन्तर है उस

ही जिसके लिए युक्ति ढूँढ़ी जाती है। विज्ञान का लक्ष्य है कारण ढूँढ़ना। इसलिए उसमें किसी घटना का कारण जानकर उसकी व्याख्या की जाती है। कारणों की सत्यता या असत्यता से यह सम्बद्ध है। पर जब नये अनुभवों के कारण पुराने विश्वासों में सन्देह उत्पन्न हो जाता है तो उनमें कौन-सा मान्य है यह एक समस्या खड़ी हो जाती है। ऐसी हालत में या तो पुराने विश्वास छोड़ दिये जाते हैं या नये विश्वासों को ही त्याग दिया जाता है या दोनों की विसंगतियों को दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। एक दार्शनिक दोनों विश्वासों में युक्तियों के द्वारा उनकी विसंगतियों को दूर करने का प्रयत्न करता है। राजनीति-दर्शन का भी सम्बन्ध ऐसे विश्वासों से नहीं है जो 'क्या सत्य है?' इसके विषय में हो अपितु ऐसे विश्वासों से जो मनुष्य या समाज के लिए 'क्या उचित' या 'शुभ है' इसके विषय में हो। जब ऐसे पुराने विश्वासों में सन्देह उत्पन्न होता है तब राजनीति दार्शनिक यह जानने का प्रयत्न करता है कि कहाँ तक और किन युक्तियों के आधार पर पुराने विश्वासों का औचित्य सिद्ध किया जा सकता है। किन बातों में पुराने और नये विश्वासों में असंगति है और क्या उन विसंगतियों का किसी नई धारणा में समन्वय सम्भव है? किसी विश्वास की प्रामाणिकता का दूसरा मापदंड तथ्यों से मेल होता भी है। पर औचित्य या शुभ मूल्य-सम्बन्धी धारणाएँ हैं। अतः उनका वस्तुनिष्ठ अस्तित्व नहीं है। तो भी यदि प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप से तथ्यों के आधार पर उनका परीक्षण हो सकता है। राजनीति-दर्शन का दृष्टिकोण यही है।

राजनीति-दर्शन का दूसरा लक्ष्य है राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण। किसी विश्वास की तर्कसम्मतता की परीक्षा के लिए उसमें जिन पदों का प्रयोग हुआ है उनके अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। कोई अवधारणा एक सामान्य प्रत्यय है। सामान्य प्रत्ययों से अनेक पदार्थों का संकेत मिलता है। 'विद्यार्थी' पद सामान्य है। यह प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रयुक्त होता है। कोई नाम किसी विशेष पदार्थ का संकेत करता है। राजनीति-दर्शन का लक्ष्य है राजनीतिक सामान्य प्रत्ययों जैसे, प्रजातंत्र, न्याय, स्वतंत्रता आदि का स्पष्टीकरण करना।

राजनीति-दर्शन में सामान्य प्रत्ययों का स्पष्टीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण तथा उनका विस्तार का दिया जाता है। किसी अवधारणा के विश्लेषण का अर्थ है उनके तत्त्वों का उल्लेख करना, जैसे—राज्य का विश्लेषण उसको परिभाषित कर उसके तत्त्वों का उल्लेख करना है। किसी अवधारणा के संश्लेषण का अर्थ है उसका अन्य अवधारणाओं से तार्किक सम्बन्ध बतलाना, जैसे—'अधिकार' की अवधारणा से 'दायित्व' की धारणा का तार्किक सम्बन्ध दिखलाया जा सकता है। अवधारणाओं के विस्तार करने का अर्थ है उसका विशिष्ट प्रयोग बतलाना जिससे उसमें अस्पष्टता न रह जाये। ये तीनों क्रियाएँ एक साथ होती हैं। इस प्रकार राजनीति-दर्शन में राजनीतिक अवधारणाओं को स्पष्ट तथा

Scanned with CamScanner